Amire Ahle Sunnat Se Bachchon Ke Baare Mein Suwalat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 213
Weekly Booklet : 213

अमीरे अहले सुन्नत से बच्चों के बारे में सुवालात

सफ़हात 22

- दीनी माहौल में सालगिरह मनाने का अन्दाज़ 03
- ज़बान की लुक्नत दूर करने का वज़ीफ़ा 08
- बच्चों की हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा 10
- बच्चों की ज़िद दूर करने का रूहानी इलाज 18

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मल्फ़ूज़ात का त़हरीरी गुलदस्ता

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत से बच्चों के बारे में सुवालात**
पहली बार : मुह़र्रमुल ह़राम **1443** हि., सप्टेमबर **2021** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से बच्चों के बारे में सुवालात**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह रिसाला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से किये गए सुवालात और उन के जवाबात पर मुश्तमिल है।

अमीरे अहले सुन्नत से बच्चों के बारे में सुवालात

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से बच्चों के बारे में सुवालात**" पढ़ या सुन ले उसे दीनो दुन्या की बरकात से मालामाल फ़रमा कर दीनी मसाइल पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उसे बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** पाक तुम पर रह़मत भेजेगा। (الکامل لابن عدی، 5/505)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सालगिरह किस अन्दाज़ से मनानी चाहिये ?

सुवाल आप के रज़ाई (दूध के रिश्ते के) पोते ह़सन रज़ा अ़त्तारी बिन अ़ली रज़ा مَاشَآءَاللّٰه 13 जुमादल ऊला 1440 सिने हिजरी को तीन साल के हुए। इस ह़वाले से एक तक़रीब का एहतिमाम किया गया, जिस में न केक काटा गया और न ही इस त़रह़ की दीगर चीज़ें हुईं बल्कि ना'त ख़्वानी और नियाज़ का एहतिमाम किया गया। येह इर्शाद फ़रमाइये : क्या हम इस मौक़अ़ को भी ह़ुसूले सवाब के लिये इस्ति'माल कर सकते हैं ? नीज़ बच्चों की सालगिरह किस अन्दाज़ से मनानी चाहिये ?

जवाब سُبْحٰنَ اللہ ! जिस त़रह़ ह़सन रज़ा की सालगिरह या'नी Birth Day मनाई गई वोह बहुत ही बरकत का बाइ़स है क्यूं कि जिस मकान में येह सिल्सिला हुवा उस मकान में ज़िक्रे ख़ुदा व ज़िक्रे मुस्त़फ़ा हो रहा था और दुआ़एं मांगी जा रही थीं और ऐसे मौक़अ़ पर रह़मत का नुज़ूल होता है। चुनान्चे ह़ज़रते सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नेकों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत का नुज़ूल होता है। (حلیۃ الاولیاء، 7/335، رقم:10750) तो जब नेकों के सरदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर होगा और उन की ना'त पढ़ी जाएगी क्या उस वक़्त रह़मत नाज़िल नहीं होगी ? फिर जब रह़मत का नुज़ूल होगा तो जो लोग वहां मौजूद होंगे क्या वोह उस रह़मत की बरसात में नहीं नहाएंगे ? और जब येह सब लोग उस रह़मत की बरसात में नहाएंगे तो जिस की सालगिरह मनाई जा रही है वोह मदनी फूल भी वहां मौजूद होगा तो क्या रह़मत के छींटे उस फूल पर नहीं पड़ेंगे ? और जिस पर रह़मत नाज़िल होगी क्या उसे बरकत नहीं मिलेगी ? बेशक उस मह़फ़िल से दुआ़एं भी मिलेंगी और बरकात भी ह़ासिल होंगी। सालगिरह वग़ैरा के मौक़अ़ पर इस अन्दाज़ से तक़ारीब और मह़ाफ़िल का इन्इ़क़ाद करते रहना चाहिये। अलबत्ता जब भी मह़फ़िले ना'त का एहतिमाम करें तो एक मुबल्लिग़ को ज़रूर बुलाएं जो सुन्नतों भरा बयान करे, मदनी फूल दे और इस्लाह़ की कोई बात बताए। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! हमारे यहां दुआ़ओं का रवाज है ताकि बच्चों को दुआ़एं और उन का समर भी मिले और आख़िरत में भी उस का ह़िस्सा हो।

बच्चों पर बुज़ुर्गाने दीन की नज़र डलवाने के फ़वाइद

क़ुरआने पाक में दुआ़ की क़बूलिय्यत की बिशारत मौजूद है :

﴿اُدْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (پ24، المؤمن:60) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।" जो बच्चे नेक बनते, ज़ेवरे इ़ल्म से आरास्ता होते और दीने मतीन की ख़िदमत करते हैं, क्या बईद (बचपन में) उन को दुआ़एं मिलती हों और उन दुआ़ओं के असरात की वज्ह से वोह इतना बड़ा मक़ाम ह़ासिल करते हों ! अगर्चे येह किसी को मा'लूम नहीं होता कि मेरे ह़क़ में किस की दुआ़ क़बूल हुई है। पहले के लोग अपने बच्चों को बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की बारगाह में लाते, उन के लिये दुआ़ करवाते, अपने बच्चों पर उन की नज़र डलवाते और उन से दम करवाते थे। जब मेरे लिये ह़िफ़ाज़ती उमूर के मसाइल नहीं थे और मुझे मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये जाने की आज़ादी थी उस वक़्त मैं ने बारहा देखा है कि बड़ी उ़म्र के लड़के छोटे बच्चों को उठाए या बरतन में पानी लिये मस्जिद के बाहर खड़े होते थे ताकि जो भी नमाज़ी आता जाए उस बच्चे या पानी पर दम करता जाए। अब भी शायद ऐसा करते हों, येह एक अच्छा और नेक काम है इस त़रह़ करने से **अल्लाह** पाक की रह़मत शामिले ह़ाल होती है और ख़ूब बरकतें भी मिलती हैं। बहर ह़ाल हम सब को बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ अपने बच्चों की सालगिरह मनानी चाहिये।

दीनी माह़ोल में सालगिरह मनाने का अन्दाज़

सुवाल दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में बच्चों की सालगिरह मनाने का अन्दाज़ क्या है ?

जवाब हमारे दीनी माह़ोल में सालगिरह मनाने का अन्दाज़ येह है कि मह़फ़िले ना'त का प्रोग्राम किया जाता है। फिर नियाज़ का एहतिमाम

कर के उसे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ग़ौसे पाक और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की बारगाह में नज़्र किया जाता है। वरना तो आ़म त़ौर पर सालगिरह मनाने में केक काटना, शम्एं जलाना और फिर बुझाना और مَعَاذَ الله ग़ुबारे फोड़ना होता है ह़ालां कि ग़ुबारे फोड़ना जाइज़ नहीं क्यूं कि येह माल का ज़ाएअ़ करना है। दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में येह त़रीक़ा नहीं है। अगर कोई इस त़रह़ करता है तो उस के मुतअ़ल्लिक़ येह न कहा जाए कि येह दा'वते इस्लामी वाला है। दीनी माह़ोल में सालगिरह मनाने का जो अन्दाज़ है येह जाइज़ त़रीक़ा है, कोई भी अ़क़्ल मन्द इसे ग़लत़ नहीं कहेगा। हां ! उसे सुन्नतों भरा न कहा जाए। इसी त़रह़ अगर आप भी अपने बच्चों की सालगिरह मनाएं तो इसी बहाने कुछ रिश्तेदारों को जम्अ़ कर लें और ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नियाज़ कर लें। किसी नेक आदमी मसलन मस्जिद के इमाम साह़िब, किसी आ़लिम साह़िब या किसी मुबल्लिग़ को बुला कर बच्चों के लिये दुआ़ करवाएं, اِنْ شَآءَ الله सवाब का ढेरों ढेर ख़ज़ाना पाएंगे।

दिन ब दिन उ़म्र में इज़ाफ़ा होता है या कमी ?

सुवाल सालगिरह के मौक़अ़ पर कहा जाता है : "बच्चा एक साल और बड़ा हो गया" क्या वाक़ेई बच्चे की उ़म्र में इज़ाफ़ा होता है और ऐसे मौक़अ़ पर इस त़रह़ के जुम्ले बोलने में कोई ह़रज तो नहीं ?

जवाब आज कल सालगिरह के मौक़अ़ पर लोग कहते हैं : "बच्चा इतने साल का हो गया और इतना बड़ा हो गया" दर ह़क़ीक़त वोह बड़ा नहीं होता बल्कि छोटा हो जाता है। मसलन **अल्लाह** पाक के इ़ल्म में

ह़सन रज़ा की उ़म्र 92 साल हो और अब इस ने तीन साल गुज़ार लिये तो येह ब ज़ाहिर बड़ा हुवा है इस को बड़ा बोलने में कोई ह़रज भी नहीं है लेकिन ह़क़ीक़त में येह 89 साल का रह गया है या'नी येह तीन साल छोटा हो चुका है। सालगिरह के मौक़अ़ पर इस अन्दाज़ से भी इ़ब्रत ह़ासिल की जा सकती है। आज कल बूढ़े बूढ़े लोग भी अपनी सालगिरह मनाते और ख़ुश होते हैं ह़ालां कि बूढ़ा और ख़ुशी येह दो मुतज़ाद चीज़ें हैं। बूढ़ा मुस्कुराता भी है तो उस के पीछे ग़मों की दुन्या होती है, अगर वोह हंसता है तो पीछे सदमों का तूफ़ान होता है मगर येह उसी बूढ़े के साथ होता है जो हुस्सास त़बीअ़त हो, जिस के पेशे नज़र अपनी मौत रहती हो और वोह ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला हो। जो बूढ़े लोग ग़फ़्लत का शिकार होते हैं ऐसे बूढ़े मेरी मुराद नहीं हैं। मैं उन की बात कर रहा हूं जिन को मेरी येह बातें समझ आती हैं और उन को इस बात का शुऊ़र भी होता है।

सालगिरह पर ग़ुबारे फोड़ना और केक काटना कैसा ?

सुवाल सालगिरह पर ग़ुबारे फोड़ना और केक काटना कैसा ?

जवाब फ़ी ज़माना तो सालगिरह के मौक़अ़ पर लोगों का येही ह़ाल है कि ख़ूब क़ह्क़हे बुलन्द करते, ज़ोर ज़ोर से Happy Birth Day कहते हुए ग़ुबारे फोड़ रहे होते हैं, ह़ालां कि ग़ुबारा फोड़ना इसराफ़ और एक फ़ुज़ूल चीज़ है, इस में माल ज़ाएअ़ हो रहा होता है। सिर्फ़ ग़ुबारे लगाना ना जाइज़ नहीं बल्कि उन्हें फोड़ कर ज़ाएअ़ कर देना इसराफ़ है लिहाज़ा ऐसी रस्म शुरूअ़ ही न की जाए जिस से मसाइल का सामना करना पड़े। हम लोग सालगिरह पर न तो ग़ुबारे लटकाते हैं और न ही केक काटते हैं

कि मुझे येह पसन्द नहीं है। मेरी सालगिरह या'नी Birth Day, 26 रमज़ानुल मुबारक को इस्लामी भाई मनाते हैं मगर मुझे मा'लूम है कि इस से मुझे खुशी होती है या क्या होता है ? "مَن آنم کہ مَن دانم" या'नी मैं अपने बारे में जानता हूं कि मैं क्या हूं ?" इस में बा'ज़ इस्लामी भाई केक काटते हैं, येह केक मुझे भी मिले हैं मगर मैं ऐसा करने वालों को हर बार समझाता हूं कि इस बार केक काट लिया मगर आयिन्दा ऐसा नहीं करना। मैं इस त़र्ज़े अ़मल को रवाज देना नहीं चाहता क्यूं कि सालगिरह की आ़म तक़ारीब में जब केक कटता है तो तालियां बजती, Happy Birth Day बोलते हुए गले फाड़े जाते और ख़ूब क़ह्क़हे लगा कर हंसा जा रहा होता है। येह नहीं मा'लूम कि इस में कितनी सुन्नतें छूट रही होती हैं फिर इन सब से बढ़ कर मर्द व औ़रत का बे पर्दा मिलने जुलने और साथ साथ तालियां बजाने का भी सिल्सिला होता है जब कि "मर्द व औ़रत का बे पर्दा इख़्तिलात़ और तालियां बजाना ह़राम है।" (बहारे शरीअ़त, 3/511, हिस्सा : 16 माख़ूज़न) लिहाज़ा केक काटने और तालियां बजाने के बजाए ना'त ख़्वानी का एहतिमाम किया जाए, अगर ना'त ख़्वानी में किसी का दिल न भी लगे तो वोह तालियां बजाने और इस जैसे दीगर गुनाहों से मह़फ़ूज़ रहेगा। उस के कानों में ना'ते पाके मुस्त़फ़ा रस घोलती रहेगी यूं कुछ तो दिल में उतरेगा, इस की बरकतें मिलेंगी और اِنْ شَآءَ الله रह़मत का वाफ़िर हिस्सा भी हाथ आएगा।

उ़लमा व सुलह़ा की बारगाह में बच्चों को ले जाना मुफ़ीद होता है

सुवाल इमामुल ह़रमैन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के उस्ताद हैं, उन्हें देख कर ही ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इल्मे दीन ह़ासिल करने की त़रफ़ माइल हुए थे, येह फ़रमाते हैं : मुझे जो मक़ामो मर्तबा मिला उस का ज़ाहिरी सबब येह है कि मेरे वालिद मुझे उ़लमा और सुलह़ा की बारगाह में ले जाया करते थे और उन से मेरे लिये दुआ़एं करवाया करते थे। येह इर्शाद फ़रमाइये कि क्या उ़लमा व सुलह़ा की बारगाह में अब भी बच्चों को ले जाना और उन से बच्चों के ह़क़ में दुआ़एं करवाना फ़ाएदे मन्द है ? (मुफ़्ती साह़िब का सुवाल)

जवाब उ़लमा व सुलह़ा की बारगाह में बच्चों को ले जाना बेशक फ़ाएदे मन्द है, इस में कोई शको शुबा नहीं है। किसी भी नेक आदमी से बच्चों पर नज़र डलवाई और उन के ह़क़ में दुआ़ करवाई जा सकती है। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 22 सफ़ह़ा 394 पर कुछ इस त़रह़ तह़रीर फ़रमाया है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिहाबुद्दीन सोह्रवर्दी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मिना शरीफ़ में मौजूद मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ की सफ़ों में आ जा रहे थे। किसी ने अ़र्ज़ की : आप ऐसा क्यूं कर रहे हैं ? इर्शाद फ़रमाया : मैं इस लिये येह कर रहा हूं कि **अल्लाह** पाक के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जब उन की निगाह किसी पर पड़ जाती है तो उसे हमेशा की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा देती है।[1]

1... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुह़म्मद अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه तह़रीर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिहाबुद्दीन सोह्रवर्दी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अय्यामे मिना में मस्जिदे ख़ैफ़ शरीफ़ में सफ़ों पर दौरा फ़रमा रहे थे। किसी ने वज्ह पूछी, फ़रमाया : لِلّٰهِ عِبَادٌ اِذَا نَظَرُوْا اِلٰى شَخْصٍ اَكْسَبُوْهُ سَعَادَةَ الْاَبَدِ فَاَنَا اَطْلُبُ ذٰلِكَ या'नी **अल्लाह** पाक के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि जब उन की निगाह किसी शख़्स पर पड़ जाती है तो उसे हमेशा की सआ़दत अ़त़ा फ़रमा देती है, मैं उसी निगाह की तलाश में दौरा करता हूं। (التیسیر بشرح الجامع الصغیر، 1/485)

याद रहे ! किसी खिलाड़ी, फ़िल्म एक्टर और डान्सर से अपने बच्चों को मिलवाना सआ़दत की बात नहीं बल्कि बरबादी वाला काम है। अगर कोई शख़्स नेकियों के ह़वाले से मश्हूर नहीं मगर वोह नमाज़ी है, दाढ़ी वाला है, इ़मामा शरीफ़ सजाता या टोपी पहनता है तो यूं देख कर आ़म तौ़र पर अन्दाज़ा हो जाता है तो इस त़रह़ का अगर कोई नेक बन्दा हो तो उस के पास अपने बच्चों को नज़र डलवाने के लिये ले जाएं, भले दम न भी करवाएं, सिर्फ़ उस के सामने बच्चों को खड़ा कर दें या उस के हाथ में दे दें तो उस की नेक नज़र पड़ गई और उस ने बच्चों को उठा कर चूम लिया तो मदीना मदीना हो जाएगा।

ज़बान की लुक्नत दूर करने का वज़ीफ़ा

सुवाल जिस की ज़बान बात करते करते अटक्ती हो उस के लिये रूह़ानी वज़ीफ़ा अ़त़ा फ़रमा दीजिये। (शारजा से सुवाल)

जवाब हर नमाज़ के बा'द सात मरतबा येह चार आयात पढ़ें, अगर सात बार नहीं पढ़ सकते तो एक ही बार पढ़ लिया करें :

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ ﴿۲۵﴾ وَ یَسِّرْ لِیْۤ اَمْرِیْ ﴿۲۶﴾ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ ﴿۲۷﴾ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ ﴿۲۸﴾ (پ16، ط:25تا28)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे कि वोह मेरी बात समझें।

पहली आयत के शुरूअ़ में लफ़्ज़ "قَالَ" है वज़ीफ़ा करते हुए इस लफ़्ज़ को नहीं पढ़ना। अगर पढ़ा तो येह ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के क़ौल की ह़िकायत हो जाएगी कि येह उन की दुआ़ है। उन्हों

ने बचपन में मुंह में अंगारा रखा था जिस की वज्ह से ज़बान शरीफ़ में गिरह पैदा हुई तो **अल्लाह** पाक ने उन्हें येह दुआ़ ता'लीम फ़रमाई। अगर बच्चा हक्लाता हो और वोह ख़ुद येह आयात न पढ़ सकता हो तो मां बाप या कोई भी जो सह़ीह़ क़ुरआने पाक पढ़ सकता हो वोह पढ़ कर उस पर दम कर दिया करे **अल्लाह** करीम उस की ज़बान की गिरह खोल देगा।

इग़्वा से ह़िफ़ाज़त की एह़तियाती तदाबीर और अवरादो वज़ाइफ़

सुवाल आज कल बच्चे बहुत ज़ियादा इग़्वा हो रहे हैं लिहाज़ा इस ह़वाले से एह़तियाती तदाबीर और अवरादो वज़ाइफ़ बता दीजिये।

जवाब जी हां! आज कल बच्चों के इग़्वा होने का सिल्सिला जारी है। **अल्लाह** पाक करम फ़रमाए, पता नहीं बच्चों को क्यूं इग़्वा किया जा रहा है। मुझे सौती पैग़ाम (Audio Message) के ज़रीए़ एक इस्लामी भाई ने बताया कि ह़ाल ही में एक छे सालह बच्ची को इग़्वा किया गया और फिर दूसरे दिन उस की लाश बोरी में बन्द टुकड़ों की सूरत में एक कचरा कूंडी के ढेर से मिली। बेचारी छे सालह बच्ची को इस त़रह़ बेदर्दी के साथ शहीद कर के कचरा कूंडी पर डाल देना समझ से बाहर है। उ़मूमन दुश्मनी और ख़ानदानी मसाइल की बिना पर लोग इस त़रह़ की वारिदातें करते हैं। इस वाक़िए़ में बेचारी बच्ची के मां बाप के लिये बड़े सदमे की बात है **अल्लाह** पाक उन्हें सब्र अ़ता फ़रमाए। इसी त़रह़ तावान की रक़्में वुसूल करने के लिये जब किसी के बच्चे को उठाया जाता होगा तो उस के पूरे ख़ानदान, कुम्बे और क़बीले की नींद उड़ जाती होगी! ज़ाहिर है बच्चों के इग़्वा की वारिदातें करने वाले दा'वते इस्लामी के

दीनी प्रोग्राम नहीं देखते होंगे क्यूं कि अगर देखते तो फिर इस त़रह़ के काम न करते । बच्चे इग़वा कर के लोगों को परेशान करने वालों को **अल्लाह** पाक हिदायत नसीब फ़रमाए और काश ! उन्हें येह सोचने की तौफ़ीक़ मिल जाए कि बच्चे इग़वा करना गुनाह का काम है और उन्हें अ़न्क़रीब मरना है ।

बच्चों को तन्हा न छोड़ा जाए

बच्चों की ह़िफ़ाज़त के लिये एक एह़तियाती तदबीर येह है कि बच्चों को तन्हा न छोड़ा जाए और आने जाने में उन के साथ कोई न कोई बड़ा ज़रूर मौजूद हो क्यूं कि तन्हा होने की सूरत में यक़ीनन उन के इग़वा होने का ख़त़रा बढ़ जाएगा और किसी बड़े का साथ होने की सूरत में कम हो जाएगा । नीज़ बच्चों को येह तरबियत भी दी जाए कि उन्हें जब कोई पकड़ना चाहे तो वोह रोना धोना और चीख़ो पुकार शुरूअ़ कर दें ताकि इग़वा करने वाले इस ख़ौफ़ से घबरा कर भाग जाएं कि लोग इकठ्ठे हो कर उन्हें कहीं पकड़ न लें । बच्चों का येह ज़ेह्न भी बनाया जाए कि कोई कितना ही लालच दे, टॉफ़ियां और खिलोने दिखाए मगर वोह उस के साथ न जाएं । हमें घर में शुरूअ़ से ही येह ता'लीमो तरबियत दी गई कि कोई पैसा या कोई और चीज़ दे बल्कि मेरी वालिदा तो यहां तक कहती थीं कि अगर कोई सोने का ढेर भी तुम्हारे सामने कर दे तब भी उस के पास नहीं जाना ।

बच्चों की ह़िफ़ाज़त का वज़ीफ़ा

बच्चों की ह़िफ़ाज़त का वज़ीफ़ा येह है कि अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ और ग्यारह बार "یَاحَافِظُ یَاحَفِیْظُ" पढ़ कर अगर बच्चों

पर दम कर दिया जाए तो हिफ़ाज़त का हिसार मिल जाएगा और اِنْ شَآءَاللّٰه कोई उन्हें इग़वा नहीं कर पाएगा। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! मजलिसे रूहानी इलाज के तहत मुल्क व बैरूने मुल्क सेंकड़ों बल्कि हज़ारों बस्ते क़ाइम हैं लिहाज़ा ता'वीज़ाते अत्तारिय्या के बस्तों से हिफ़ाज़त का ता'वीज़ हासिल कर के बच्चों को पहना दिया जाए ताकि अगर कोई उन्हें इग़वा करना चाहे तो उस वक़्त उन्हें चीख़ो पुकार याद आ जाए और वोह चीख़ना पुकारना शुरूअ़ कर दें या **अल्लाह** पाक उन की मदद के लिये किसी को भेज दे और इग़वा करने वाले उसे देख कर भाग जाएं या इग़वा करने के लिये जब वोह बच्चों की तरफ़ हाथ बढ़ाएं तो उन पर ख़ौफ़ तारी हो जाए और वोह उलटे पाउं भाग खड़े हों तो ता'वीज़ की बरकत से **अल्लाह** पाक की तरफ़ से इस तरह के अस्बाब पैदा हो सकते हैं और यूं ता'वीज़ के ज़रीए बच्चों की हिफ़ाज़त की सूरत बन सकती है।

बड़ों की हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा

बड़ों के लिये हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा येह है कि जब वोह वुज़ू करें तो हर उ़ज़्व धोते वक़्त एक बार "یَاقَادِرُ" पढ़ लिया करें मसलन जब वुज़ू शुरूअ़ करें तो सीधा और उलटा हाथ धोते हुए एक बार "یَاقَادِرُ" पढ़ लें, इसी तरह जब एक बार कुल्ली कर लें तो दूसरी बार कुल्ली करने से पहले एक बार "یَاقَادِرُ" पढ़ लें, फिर जब एक बार नाक में पानी चढ़ा लें तो अब रुक जाएं और एक बार "یَاقَادِرُ" पढ़ कर मज़ीद दो बार नाक में पानी चढ़ा लें। इसी तरह हर उ़ज़्व धोते और सर का मस्ह करते वक़्त एक बार "یَاقَادِرُ" पढ़ लें, इस के साथ साथ दुआएं भी पढ़ी जा सकती हैं मगर

दुआ़ओं की जगह दुरूद शरीफ़ पढ़ना अफ़्ज़ल है लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया जाए। अगर लोग इस त़रह़ एह़तियातें बरतेंगे और अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه बेहतरियां आएंगी।

बेसिन पर वुज़ू करते हुए "یَاقَادِرُ" पढ़ना कैसा ?

सुवाल क्या वॉशरूम में बेसिन पर वुज़ू करते हुए भी "یَاقَادِرُ" पढ़ सकते हैं ?

जवाब आज कल पैसे वाले लोगों के घरों में आसाइशों का पूरा इन्तिज़ाम होता है और ज़बर दस्त डेकोरेशन होती है। इसी त़रह़ मुतवस्सित़ या'नी दरमियाने त़ब्क़े के लोगों और जो सिर्फ़ नाम के ग़रीब होते हैं उन के घरों में भी डेकोरेशन और सजावटें होती हैं मगर वुज़ूख़ाना नहीं होता। दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता लोगों में से भी किसी किसी के घर वुज़ूख़ाने का एहतिमाम होता है ह़ालां कि घरों में वुज़ूख़ाना बनाने की बारहा तरग़ीब दिलाई गई है और राहनुमाई के लिये मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा "वुज़ू का त़रीक़ा" नामी रिसाले में वुज़ूख़ाने का नक़्शा भी छापा गया है। आ़म तौ़र पर घरों में बेसिन पर वुज़ू किया जाता है और बेसिन वॉशरूम के साथ बना होता है। याद रखिये ! अगर बेसिन वॉशरूम के साथ बना हो तो वुज़ू करते हुए "یَاقَادِرُ" और वुज़ू करने से पहले "بِسْمِ اللّٰه" नहीं पढ़ सकते। चूंकि वुज़ू से पहले "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ना मुस्तह़ब है और फ़क़त़ **अल्लाह** पाक का नाम लेना सुन्नते मुअक्कदा है। (بحر الرائق، 1/39) इस लिये वॉशरूम में लगे हुए बेसिन पर वुज़ू करने के बाइ़स अगर इसे छोड़ने की आ़दत बनाएंगे तो गुनाहगार हो जाएंगे लिहाज़ा ऐसी सूरत में "بِسْمِ اللّٰه" पढ़ने के लिये वॉशरूम से बाहर निकलना ज़रूरी हो जाएगा।

W.C और बेसिन दोनों को अलग अलग कीजिये

अगर वॉशरूम का इह़ाता़ बड़ा हो तो W.C या कमोड (Commode) को स्लाइडिंग डोर या ग्लास (या'नी शीशा) लगा कर इस त़रह़ कवर कर लें कि येह देखने में अलग लगे तो इस सूरत में बेसिन पर वुज़ू करते हुए "یَاقَادِرُ" और "بِسْمِ اللّٰہ" पढ़ने में ह़रज नहीं। याद रहे ! ख़ाली प्लास्टिक का पर्दा लगा कर W.C या कमोड को कवर करने से काम नहीं चलेगा बल्कि इस के लिये किसी सोलिड चीज़ मसलन लकड़ी, सिमेन्ट, एलोमीनियम या हार्डबोर्ड की दीवारें लगा कर कवर करना ज़रूरी है। मैं ने अपने घर के वॉशरूम में और फ़ैज़ाने मदीना में अपने ज़ेरे इस्ति'माल वॉशरूम में W.C को इसी त़रह़ कवर किया हुवा है। मुझे कभी कभार जब अरब पती लोगों के घरों में जाने का इत्तिफ़ाक़ होता है तो वुज़ू करने में मज़ा नहीं आता क्यूं कि बेसिन पर खड़े खड़े वुज़ू करना पड़ता है। जिन घरों में बेसिन पर वुज़ू करना पड़ता है या तो उन घरों में बड़े बूढ़े नहीं होते होंगे या फिर बेचारे खड़े खड़े वुज़ू करते होंगे जिस के बाइस बेचारों की टांगों में दर्द हो जाता होगा और बसा अवक़ात वोह गिर भी पड़ते होंगे। ख़याल रहे कि जब बूढ़ा आदमी गिरता है तो अगर उस की किसी नाज़ुक जगह पर चोट आ जाए या फिर हड्डियां टूट जाएं तो वोह उठ नहीं सकता बल्कि उसे कन्धे पर उठा कर ले जाना पड़ता है और फिर बेचारे को तक्लीफ़ें उठा कर ज़िन्दगी के साल दो साल पूरे करने पड़ते हैं क्यूं कि कमज़ोर होने के बाइस हड्डियां आसानी से जुड़ती नहीं हैं। आज कल घरों में लोग त़रह़ त़रह़ की आसाइशें, स्विमिंग पूल और

हौज़ बनाते हैं मगर वुज़ूख़ाना बनाने के लिये उन के पास दो गज़ जगह नहीं होती। अपने घरों में ऐसी जगह कि जहां वुज़ू करने में सुस्ती न हो मस्जिद के वुज़ूख़ाने की त़रह़ एक वुज़ूख़ाना बनाइये और उस में एक या दो नल लगाइये اِنْ شَآءَاللہ वुज़ू करने में बहुत सहूलत हो जाएगी। अगर इस निय्यत से अपने घर में वुज़ूख़ाना बनाएंगे कि **अल्लाह** पाक का नाम ले सकें, दुरूदे पाक पढ़ सकें और "یَاقَادِرُ" पढ़ सकें तो येह वुज़ूख़ाना बनाना भी इबादत बन जाएगा। वुज़ूख़ाना किस त़रह़ बनाया जाए इस के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना से "वुज़ू का त़रीक़ा" नामी रिसाला ह़ासिल कर के उस का मुत़ालआ़ कीजिये, इस रिसाले में वुज़ूख़ाना बनाने के मदनी फूल और तस्वीर भी दी गई है कि किस त़रह़ वुज़ूख़ाना बनाना है।

कार्टून वाली चप्पल पहनना कैसा ?

सुवाल आज कल बच्चे कार्टून वाली चप्पल और कार्टून वाले खिलोने लेने की ज़िद करते हैं, जब कि हम ने बड़ों से सुना है कि कार्टून वाली कोई चीज़ घर में नहीं रखनी चाहिये, इस बारे में शर्ई राहनुमाई फ़रमा दीजिये।

जवाब जो कार्टून किसी ज़ी रूह़ या'नी जानदार मसलन किसी ऐसे ज़िन्दा इन्सान या जानवर की ह़िकायत करे जो पाया जाता हो तो ऐसा कार्टून बनाना, ना जाइज़ और मम्नूअ़ है, क्यूं कि वोह तस्वीर के ह़ुक्म में है। (مرقاۃ المفاتیح،8/266، تحت الحدیث:4489) रहा तस्वीर वाले जूतों का मुआ़मला ! तो जूते में जैसी भी तस्वीर हो, भले किसी इन्सान की सह़ीह़ तस्वीर भी हो तब भी अगर बच्चा वोह जूता पहनता है तो कोई मुमानअ़त नहीं है, क्यूं

कि जूता तौहीन की जगह है, उस पर मौजूद तस्वीर न रह़मत के फ़िरिश्तों के लिये रुकावट है और न ही नमाज़ में इस से कोई मस्अला होगा। (बहारे शरीअ़त, 1/629, हिस्सा : 3 माख़ूज़न) अलबत्ता जूते पर जानदार की तस्वीर बनाने वाला गुनाहगार है। (مرقاۃ المفاتیح، 8/266، تحت الحدیث:4489) जाइज़ खिलोनों से खेला जा सकता है, लेकिन उन्हें तौहीन की जगह पर रखा जाए। बा'ज़ लोग खिलोनों के लिये घर में शोकेस या ख़ाने बनवाते हैं और उन में ऐसी तसावीर वाले खिलोने रखते हैं जो जानदार की हिकायत कर रहे होते हैं, इस पर वईद है और इन की वज्ह से रह़मत के फ़िरिश्ते घर में दाख़िल नहीं होते। (بخاری، 2/385، حدیث:3225) अलबत्ता ऐसे खिलोने अगर इधर उधर पड़े हों और ठोकरों में आ रहे हों तो फिर मुमानअ़त नहीं है।

बच्चों के साथ नरमी कीजिये

सुवाल क्या खेलने कूदने वाले छोटे बच्चों को वालिदैन की ख़िदमत करनी चाहिये ? (एक छोटे बच्चे का सुवाल)

जवाब छोटे बच्चों को भी वालिदैन की ख़िदमत करनी चाहिये, अभी से ख़िदमत करेंगे तो बड़े हो कर भी करेंगे, नीज़ इस से मां बाप की दुआ़एं मिलेंगी और वोह ख़ुश भी होंगे। अलबत्ता मां बाप को चाहिये कि बच्चे की त़ाक़त और हिम्मत के मुत़ाबिक़ ख़िदमत लें, इतनी ख़िदमत न लें कि बच्चे पर बोझ पड़ जाए और वोह थक जाए। जब बच्चा ख़िदमत करे तो वालिदैन को चाहिये कि उस की दिलजूई और ह़ौसला अफ़्ज़ाई करें, दिलजूई सवाब का काम है और ह़ौसला अफ़्ज़ाई बच्चे की पगार है। दिलजूई का दुन्यावी फ़ाएदा येह होता है कि बच्चा ज़ियादा काम करता

है और ख़ुशदिली के साथ करता है। जब तक बच्चे की हौसला अफ़्ज़ाई नहीं होगी वोह तरक़्क़ी नहीं करेगा। अगर बच्चे को टोकते रहेंगे और तन्क़ीद करते रहेंगे तो वोह दिल तोड़ कर बैठ जाएगा। बच्चा कभी बहुत अच्छा काम कर ले तो उसे इन्आ़म भी देना चाहिये और दुआ़एं देनी चाहिएं, ऐसा न हो कि हर वक़्त बच्चे को कोसते और पीटते रहें, क्यूं कि अगर क़बूलिय्यत की घड़ी हुई और उस को बद दुआ़ लग गई तो रोना भी आप को पड़ेगा। जो वालिदैन हर वक़्त अपने बच्चों को डांटते रहते हैं उन में इ़ल्म और तरबियत की कमी होती है। मां, बच्चों के अब्बू का ज़ेह्न बनाएगी कि "तुम ने इस को सर पे चढ़ा कर रखा है, तुम इस को कुछ बोलते नहीं हो, इसे मारते नहीं हो, इस की पिटाई करो, बाप का रो'ब होता है, सख़्ती करो।" अगर बाप इन बातों में आ जाए तो औलाद आगे चल कर ऐसी बाग़ी होती है कि बड़ी हो कर मां बाप को ओल्ड हाउस (Old House) का रास्ता दिखाती है। मां बाप की अपनी भलाई इसी में है कि नरमी करें और प्यार करें, ठीक है कि ज़रूरतन शरीअ़त की ह़द में रह कर सख़्ती भी की जा सकती है, लेकिन बात बात पर डांट डपट और टोकटाक ठीक नहीं होती, बल्कि नुक़्सान देह होती है।

बच्चे ज़िद क्यूं करते हैं ?

सुवाल छोटे बच्चे बहुत ज़िद्दी होते हैं इन की ऐसी तरबियत किस त़रह़ की जाए कि येह ज़िद्दी न बनें और जब येह ज़िद कर रहे हों उस वक़्त ऐसा क्या किया जाए कि येह ज़िद से बाज़ आ जाएं ? नीज़ बच्चों की तरबियत के ह़वाले से राहनुमाई फ़रमा दीजिये।

जवाब अगर येह ज़िद नहीं करेंगे तो इन्हें बच्चा कौन बोलेगा ? बच्चे कुछ न कुछ ज़िद तो करते ही हैं, इन से बड़ों को सीखना चाहिये गोया वोह ज़िद कर के अपने बारे में बता रहे होते हैं कि मैं बच्चा हूं लेकिन आप बच्चे नहीं हैं लिहाज़ा आप ज़िद न किया करें। या'नी ज़िद करना बच्चों का काम है बड़ों का काम नहीं है।

बच्चों के मुस्तक़िल तौ़र पर ज़िद्दी बन जाने की वज्ह येह होती है कि वालिदैन शुरूअ़ से ही उन की हर ज़िद पूरी करते आ रहे होते हैं तो बच्चे बड़े हो कर भी इसी आ़दत में मुब्तला रहते हैं। शुरूअ़ शुरूअ़ में बच्चा बहुत प्यारा लगता है जो मांगता है उस से बढ़ कर दिला दिया जाता है लेकिन कुछ बड़ा होने के बा'द उस की हर मांगी पूरी नहीं की जाती, इस त़रह़ बच्चे के ज़ेह्न में येह बात बैठ जाती है कि पहले जो मांगता था मिल जाता था लेकिन अब मेरे मुत़ालबात पूरे नहीं किये जाते, यूं वोह ज़िद शुरूअ़ कर देता है। बा'ज़ अवक़ात वाक़ेई ख़्वाह म ख़्वाह की ज़िद कर रहा होता है लेकिन इस का हरगिज़ येह ह़ल नहीं है कि बच्चे को मारपीट शुरूअ़ कर दी जाए बल्कि इस का इ़लाज येह है कि बच्चे की ज़िद पूरी करना छोड़ दें आहिस्ता आहिस्ता उस की आ़दत निकल जाएगी। इस में भी येह न हो कि एक दम से बच्चे को सब कुछ दिलाना छोड़ दें बल्कि कभी कभी ज़िद पूरी भी कर दिया करें वरना बच्चा बाग़ी और वालिदैन से बदज़न हो जाएगा, उस के ज़ेह्न में ग़ैर महसूस तौ़र पर येह बात जम जाएगी कि मेरे मां बाप मुझ पर ज़ुल्म करते हैं। ऐसे ही बच्चे होते हैं जो बड़े हो कर कहते सुनाई देते हैं कि हमें हमारे वालिदैन का प्यार

नहीं मिला ! बेहतरी इसी में है कि हिक्मते अ़मली से अपने बच्चों की ज़िद की आ़दत ख़त्म करें। याद रखिये ! येह आ़दत एक दम ख़त्म नहीं हो सकती। बा'ज़ वालिदैन अपनी औलाद के साथ इन्तिहाई ना मुनासिब रवय्या इख़्तियार करते हैं उन को बात बात पर झाड़ते हैं बल्कि मारधाड़ भी करते हैं, उन की कोई ज़िद पूरी नहीं करते, उन का मान नहीं रखते, ख़र्चा करते हैं लेकिन बच्चे के कहने पर नहीं करते अपने त़ौर पर जो समझ आता है करते रहते हैं, इस त़रह़ बच्चे अपने वालिदैन से बाग़ी हो जाते हैं और फिर बेचारे ना फ़रमानी पर उतर कर अपनी आख़िरत ख़राब कर बैठते हैं।

बच्चों की ज़िद दूर करने का रूह़ानी इलाज

बच्चा अगर ज़िद करता हो और वालिदैन में से कोई सह़ीह़ क़ुरआने पाक पढ़ना जानता हो तो रोज़ाना एक एक बार या तीन तीन बार सूरए फ़लक़ और सूरए नास अव्वल आख़िर एक बार या तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बच्चे पर दम करें اِنْ شَآءَاللّٰه बेहतरी आएगी।

हाऊ और भाऊ कौन हैं ?

सुवाल बड़े बा'ज़ दफ़्आ़ बच्चों को डराने के लिये कहते हैं कि "हाऊ आ जाएगा, या भाऊ आ जाएगा, या हाऊ ! इसे ले जाओ" येह हाऊ और भाऊ कौन हैं, जो नज़र भी नहीं आते और बच्चे इन से डरते भी हैं ?

(मुह़म्मद दान्याल अ़त़्तारी, त़ालिबे इ़ल्म मद्रसतुल मदीना)

जवाब येह हाऊ और भाऊ फ़र्ज़ी नाम हैं, इन का कोई वुजूद नहीं है। बच्चों को इस त़रह़ बोलना कि "भाऊ आ जाएगा, तुझे ले जाएगा, या तुझे फ़क़ीर ले जाएगा, वोह देखो भाऊ" बा'ज़ सूरतों में झूट भी होता है और मां बाप के नामए आ'माल में गुनाह लिखा जाता है।

(ابوداود،4/387،حدیث:4991ماخوذا) मज़ीद इस का नुक़्सान येह होता है कि बच्चा डरपोक हो जाता है और उस के दिल में डर बैठ जाता है। फिर फ़ज्र के लिये अंधेरे में निकलने से भी डरता है। बच्चों को बहादुर बनाना चाहिये, डरपोक नहीं बनाना चाहिये। बा'ज़ अवक़ात मां बाप बच्चे से कहते हैं कि "तुम्हें खिलोना ला कर देंगे, बिस्किट देंगे, चॉक्लेट देंगे, येह देंगे और वोह देंगे" और निय्यत येह होती है कि "सिर्फ़ बहला रहे हैं, ला कर नहीं देंगे।" इस त़रह़ झूट नहीं बोलना चाहिये। **अल्लाह** पाक हम सब को सच्चा कर दे।

बिग़ैर इजाज़त अब्बू की बाईक चलाना कैसा ?

सुवाल बा'ज़ बच्चे बिग़ैर पूछे अपने अब्बू की बाईक चलाते हैं और ख़ामोशी से आ कर खड़ी कर देते हैं, ऐसा करना कैसा ?

(मुह़म्मद त़ल्ह़ा अ़त़्त़ारी, त़ालिबे इल्म शो'बए ह़िफ़्ज़ मद्रसतुल मदीना)

जवाब इस में तीन ग़लत़ियां सामने आ रही हैं। एक तो येह कि अब्बू की इजाज़त के बिग़ैर बाईक ली, ज़ाहिर है कि इस में उन की रिज़ामन्दी नहीं होगी और उन्हें पता चलेगा तो नाराज़ भी होंगे। दूसरी ग़लत़ी येह की, कि बिग़ैर लाइसन्स गाड़ी चलाई, जब कि तीसरी ग़लत़ी येह की, कि छोटी उ़म्र में गाड़ी चलाई, क्यूं कि 18 साल से कम उ़म्र बच्चों को गाड़ी चलाना मन्अ़ है, एक्सीडन्ट का ज़ियादा ख़त़रा होता है और 18 साल से कम उ़म्र बच्चों का लाइसन्स भी नहीं बनता। बिग़ैर इजाज़त और वोह भी छोटी उ़म्र में गाड़ी नहीं चलानी चाहिये, क्यूं कि इस में जान का ख़त़रा भी है और गाड़ी भी टूटफूट का शिकार हो सकती है जिस में अब्बू

का नुक़्सान है। अगर किसी को टक्कर मार दी या किसी का नुक़्सान कर दिया तो फिर केस हो जाएगा और हमारे मुल्क में तो बच्चों की भी जेल है, ऐसा करने पर बच्चा छूट कर नहीं जा सकेगा और उसे जेल में डाल दिया जाएगा, फिर अम्मी, अब्बू और ख़ानदान वाले अलग परेशान होंगे, रोने धोने का भी कोई फ़ाएदा नहीं होगा और जेल से जाने नहीं दिया जाएगा। इन सब चीज़ों में न जाने कितना पैसा भी ख़र्च हो जाएगा, इस लिये ख़ूब एह़तियात़ करनी है और मुल्क व शरीअ़त का क़ानून भी नहीं छोड़ना।

बच्चों को भी दूसरों को सलाम करना चाहिये

सुवाल बा'ज़ बच्चे सलाम करने में शरमाते हैं, हमें किस किस को सलाम करना चाहिये ? (छोटा बच्चा, सय्यिद मुह़म्मद अ़ब्बास अ़त्तारी)

जवाब बच्चों को भी सलाम करना चाहिये, ताकि आ़दत पड़े। जो भी बड़े हैं, जैसे अम्मी, अब्बू, बाजी, भाई, चाचू, अंकल, आन्टी और पड़ोस में रहने वाले बल्कि जो भी मुसल्मान हैं उन्हें आमना सामना होने पर या मौक़अ़ मिलने पर सलाम करना चाहिये। कोई घर आए तो सलाम करें, किसी के घर जाएं तो सलाम करें। अभी से आ़दत डालेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه आगे चल कर येह आ़दत काम आएगी।

** ** ** ** ** ** ** **

नोट

सफ़ह़ा 3, 4 और 12 पर मौजूद सुवालात शो'बा मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की त़रफ़ से क़ाइम किये गए हैं अलबत्ता जवाबात अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ही अ़त़ा कर्दा हैं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत

बच्चों, बूढ़ों और मरीज़ों को प्यार दीजिये।

(15 रमज़ानुल मुबारक 1442 हि. रात)

978-969-722-222-3
01082219

فیضان مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net